रामाश्रम सत्संग (रजि .) ग़ज़ियाबाद (उ. प्र.)

रामाश्रम सत्संग संतमत पर आधारित आध्यात्मिक विद्या का एक प्रमुख केंद्र है जिसकी स्थापना समर्थ सद्गुरु परमसन्त श्री रामचन्द्र जी महाराज (पूज्य लालाजी महाराज) द्वारा अपने ग्रह नगर फतेहगढ़ (उ.प्र .) में सन 1915 ईस्वी में की गयी. परमसन्त रामचन्द्र जी महाराज एक उच्च कोटि के संत थे जिन्होंने आध्यात्म विद्या, विशेष रूप से चक्र वेधन विद्या, का ज्ञान संत शिरोमणि मौलाना फ़ज़ल अहमद खां साहब से प्राप्त किया था. पूज्य लालाजी महाराज ने पूज्य मौलाना साहब से दीक्षा 23-01-1896 को प्राप्त की. 11-10-1896 को पूज्य मौलाना साहब ने पूज्य लालाजी को *'इज़ाज़त ताअम्मा* ' अता फ़रमाई. पूज्य मौलाना साहब से प्राप्त ब्रह्म विद्या को मनुष्य मात्र में बिना किसी भेद भाव के फैलाने के उद्देश्य से सन 1915 में रामाश्रम सत्संग प्रारम्भ किया गया जो तब से आज तक परम् सगुरूओं के मार्गदर्शन में निरन्तर अबाध रूप से कार्य कर रहा है.

पूज्य लालाजी महाराज ने सन 1915 आध्यात्मिक शिक्षा का कार्य अपने प्रिय शिष्य परमसन्त डॉ. श्रीकृष्ण लालजी महाराज के सुपुर्द कर दिया तथा उन्हें सन 1931 में 'इज़ाज़त ताअम्मा' देकर हुक्म दिया कि " *जाओ मेरा काम करो और मेरे मिशन को भूले-भटके और ज़रूरतमन्दों तक पहुँचाओ.*"

पूज्य लालाजी महाराज ने सन 1929 में सिकन्दराबाद (उ.प्र.) में डॉ. श्रीकृष्ण लालजी के यहाँ सत्संग की नीव डाली. 14 अगस्त, 1931 को पूज्य लालाजी के महानिर्वाण के बाद उनके शिष्य परमसन्त डॉ. श्रीकृष्णलाल जी महाराज ने रामाश्रम सत्संग के आचार्य-अध्यक्ष का दायित्व ग्रहण किया तथा अपने गुरुदेव के मिशन को निरन्तर आगे बढ़ाया. उन्होंने पूज्य लालाजी द्वारा स्थापित रामाश्रम सत्संग का व्यापक विस्तार कर, बिना किसी भेद-भाव के, भूले-भटके प्राणियों को परमार्थ के रास्ते पर डालकर उनका जीवन सार्थक किया. उन्होंने अपनी साधना, तपस्या और पूर्णता से इस ब्रह्मविद्या को जन-साधारण के लिए सहज एवं सरल बना दिया.

परमसन्त डॉ. श्रीकृष्ण लालजी महाराज 18 मई 1970 को महानिर्वाण पद प्राप्त कर ब्रह्मलीन हो गए. आपने अपने जीवन काल में सत्संग का काम आगे चलाने के लिए अपने प्रमुख उत्तराधिकारी के रूप में अपने परमप्रिय शिष्य परमपूज्य डॉ. करतारसिंह जी साहब को सत्संग का सर्वोच्च आचार्य नियुक्त किया तथा पूज्य डॉ. हरिकृष्ण भटनागर तथा पूज्य डॉ. बी.के.सक्सेना को अलग-अलग क्षेत्रों के लिए आचार्य नियुक्त किया. डॉ. करतारसिंह जी साहब सन 1951 से ही रामाश्रम सत्संग की सेवा में रहते हुए पूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लालजी महाराज के गुरु-मुख शिष्य रहे थे. पूज्य डॉ. करतारसिंह जी साहब ने रामाश्रम सत्संग के अध्यक्ष-आचार्य के रूप में सत्संग का कार्य पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ करते हुए अपने गुरुदेव के मिशन को कुशलता पूर्वक आगे बढ़ाया तथा सत्संग का विस्तार किया. प्रेम एवं दया की

प्रतिमूर्ति डॉ. करतारसिंह जी की छत्र-छाया में रामाश्रम सत्संग ने एक बट-बृक्ष का रूप ले लिया जिसकी छाया में बड़ी संख्या में बहिन -भाई आध्यात्मिक ज्ञान का लाभ प्राप्त कर अपना दीन और दुनियाँ दोनों ही बना रहे हैं.

रामाश्रम सत्संग की परम्परा एवं संस्था के विधान के नियम 5(3) तथा 10 के अनुसार सत्संग केआचार्य -अध्यक्ष को अपने जीवन काल में ही अपने उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार होता है. इस व्यवस्था के अनुसार पूज्य डॉ. करतारसिंह जी ने दिनाँक 14-11-1994 को लिखित आज्ञा-पत्र जारी करके अपने बाद अपने स्थान पर पूज्य डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना जी, गाज़ियाबाद को रामाश्रम सत्संग के सर्वोच्च आचार्य के पद पर नियुक्त किया. डॉ. शक्ति कुमार जी को सम्पूर्ण आचार्य गुरु पदवी पूर्व से ही प्राप्त थी.

दिनाँक 15 जून, 2012 को परमपूज्य डॉ. करतारसिंह जी साहब अपनी जीवन लीला पूर्ण कर ब्रह्मलीन हो गए. उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात, उपरोक्त्त व्यवस्था के अनुसार, पूज्य डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना जी, ने रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद के सर्वोच्च आचार्य-अध्यक्ष का दायित्व ग्रहण किया तथा वह वर्तमान में इस पद पर आसीन होकर अपने पूर्वज गुरुजनों के मिशन को कुशलतापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं.

रामाश्रम सत्संग एक रजिस्टर्ड संस्था है जिसका संचालन समिति के उप-नियमों के अनुसार गठित कार्यकारिणी द्वारा आचार्य-अध्यक्ष के मार्ग दर्शन में किया जाता है. पूज्य अध्यक्ष जी द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर कार्यरत सत्संग की शाखाओं (सेंटर्स) के प्रभारी नियुक्त किये गए हैं. आध्यात्मिक विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए शिक्षक तथा मानीटर्स बनाये गए हैं तथा वरिष्ठ जनों को विभिन्न श्रेणी की इज़ाज़तें जैसे इज़ाज़त ताअम्मा, इज़ाज़त बैत, इज़ाज़त तालीम, इज़ाज़त मॉनिटर आदि अता की गयीं हैं. सत्संग द्वारा 'राम सन्देश ' पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन किया जाता है तथा गुरुजनों के प्रवचनों के संग्रह (संत वचन एवं संत प्रसादी) तथा अनेक आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की गयीं हैं. रामाश्रम सत्संग का यह साहित्य प्रिंट-फॉर्म में होने के साथ-साथ अब *डिजिटल फॉर्म* (ई-बुक्स) में सत्संग के फेसबुक ग्रुप्स तथा इस वेबसाइट पर भी उपलब्ध है.

रामाश्रम सत्संग के प्रति वर्ष तीन *वार्षिक भण्डारे*, दशहरा, बसंत पंचमी तथा मई माह में, आयोजित होते हैं गुरु पूर्णिमा पर्व पर विशेष आयोजन होता है. इनके अतरिक्त देश के विभिन्न क्षेत्रो में ' क्षेत्रीय सत्संग ' भी होते हैं. सत्संग के सभी सेंटर्स पर रविवार के दिन नियमित रूप से सामूहिक सत्संग होता है. सत्संग का रजिस्टर्ड कार्यालय शास्त्री नगर, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र .) में है जहाँ नियमित रूप से प्रतिदिन प्रातः एवं सांयकाल संध्या-पूजा होती है जिसमें स्थानीय सत्संगी भाई-बहिनों के अलावा

बाहर से आने वाले सत्संगी भाई भी सम्मिलित होकर सत्संग-लाभ एवं गुरु कृपा प्राप्त करते हैं. इन सभी आयोजनों में परमपूज्य गुरुदेव (वर्तमान में पूज्य डॉ. शक्तिकुमार जी) स्वयं उपस्थित रहकर अपनी कृपा-प्रसादी से साधक भाई-बहिनों को उपकृत करते हैं तथा वे गुरु-कृपा से फ़ैज़याब होते हैं.

हमारे आध्यात्मिक वंश के पूर्व महापुरुष -गुरुजन जिनकी कृपा से हमें यह ईश्वरीय विद्या तथा ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला है आज भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं तथा हमें अपनी कृपा का दान प्रदान करते हैं. वार्षिक भण्डारों के अवसर पर हम उन पवित्र एवं महान आत्माओं का सामूहिक आव्हान करके अपनी श्रद्धा समर्पित करते हैं तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं.

रामाश्रम सत्संग संतमत का मार्ग है. सत्संग का अर्थ है 'सत' का 'संग'. सत जो सदा से विद्यमान है, था भी, है भी, और भविष्य में भी रहेगा. *हमें जहाँ भी सत्य का संग मिले वही सत्संग है.* संतमत प्रेम और दीनता की राह है. रामाश्रम सत्संग में प्रेम, दीनता, गुरु-प्रेम एवं पूर्ण समर्पण के साथ गुरु द्वारा बताई गयी साधना एवं नियमित अभ्यास, रहनी-सहनी के सुधार तथा चरित्र निर्माण, त्याग एवं सहयोग पर विशेष बल दिया जाता है. संतों ने भक्ति मार्ग को 'गुरुमत' और जिस मार्ग में प्रेम और भक्ति नहीं है उसको 'मन मत' कहा है. भक्ति मार्ग की विशेष महिमा बताई गयी है क्योंकि यह दया एवं कृपा का मार्ग है. किन्तु ऐसी भक्ति सतगुरु के सत्संग से ही प्राप्त होती है क्योंकि वे प्रेम के अथाह सागर होते हैं. रामाश्रम सत्संग ऐसा ही एक सत्संग है.

रामाश्रम सत्संग की नीव समर्थ सद्गुरु श्री रामचंद्र जी द्वारा सन 1915 में डाली गयी थी. आपने सन 1929 में सिकन्दराबाद (उ.प्र.) में डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज के यहाँ सत्संग प्रारम्भ कराया. पूज्य लालाजी के महानिर्वाण के बाद सन 1933 से रामाश्रम सत्संग का भंडारा प्रारम्भ हुआ तथा सन 1954 से मासिक पत्रिका *'राम सन्देश'* का प्रकाशन शुरू हुआ.

रामाश्रम सत्संग 'संत मत' पर आधारित आध्यात्मिक विद्या का केंद्र है. इसके उद्देश्य, नियम, साधना पद्धति, उपदेश आदि सभी संत मत से प्रेरित हैं, जिनका उल्लेख आगे किया गया है.

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX